Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

भारत का इतिहास : प्राचीनतम काल से लगभग 300 सी.ई. तक

(History of India from the Earliest Times upto C. 300 C.E.)

B.H.I.C.-131

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Prieti Gupta*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

भारत का इतिहास : प्राचीनतम काल से लगभग 300 सी.ई. तक

(History of India from the Earliest Times upto C. 300 C.E.)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1

Question Paper—December-2023 (Solved) 1-2

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3

Question Paper—December-2022 (Solved) 1-1

Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1

Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत 1
(Sources of Ancient Indian History)

2. एक स्रोत के रूप में पुरातत्व विज्ञान और प्रमुख पुरातात्विक-स्थल 13
(Archaeological Science and Major Archaeological Sites as a Source)

3. भारतीय इतिहास : प्राकृतिक विशेषताएं, गठन एवं लक्षण 21
(Indian History: Natural Features, Formation and Characteristics)

4. शिकारी-संग्रहकर्त्ता : पुरातात्विक परिप्रेक्ष्य, कृषि और पशु-पालन का आरंभ 32
(Hunter-Collector: Archaeological Perspective,
Start of Agriculture and Animal Husbandry)

5. हड़प्पा सभ्यता : कालानुक्रम, भौगोलिक विस्तार, ह्रास और विघटन 45
(Harappan Civilization: Chronology, Geographic Expansion,
Decimation and Disintegration)

6. हड़प्पा सभ्यता : भौतिक विशेषताएं, सम्पर्कों का रूप, समाज और धर्म 54
(Harappan Civilization: Physical Characteristics,
Form of Contact, Society and Religion)

7. ताम्र पाषाण युग तथा आरंभिक लौह युग 68
(Copper Stone Age and Early Iron Age)

8. प्रारम्भिक वैदिक समाज 78
(The Early Vedic Society)

9. उत्तर वैदिक युग में परिवर्तन 87
(Transformation in the Post-Vedic Age)

10. जनपद और महाजनपद : नगरीय केन्द्रों का उदय, समाज और अर्थव्यवस्था 93
(Janapadas and Mahajanapadas:
Rise of Urban Centres, Society and Economy)

11. बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा अन्य धार्मिक विचार 104
(Buddhism, Jainism and other Religious Views)

12. सिकन्दर का आक्रमण 114
(Alexander's Invasion)

13. मौर्य शासन की स्थापना और मगध साम्राज्य का विस्तार 118
(Establishment of Mauryan Rule and
expansion of Magadha Empire)

14. प्रशासनिक संगठन, अर्थव्यवस्था और समाज 125
(Administrative Organization, Economy and Society)

15. दक्कन और तमिलाहम में आरंभिक राज्य निर्माण 136
(Early Kingdom Formation in Deccan and Tamilaham)

16. कृषक बस्तियां, कृषक समाज, व्यापार और 143
शहरी केन्द्रों का विस्तार-प्रायद्वीपीय भारत
(Farmer Settlements, Farming Societies, Trade and
Expansion of Urban Centers – Peninsular India)

17. तमिल भाषा और साहित्य का विकास 154
(Growth of Tamil Language and Literature)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भारत का इतिहास : प्राचीनतम काल से लगभग 300 सी.ई. तक

(History of India from the Earliest Times upto C. 300 C.E.)

B.H.I.C.-131

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खंड से कम-से-कम* ***दो*** *प्रश्न कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग–I

प्रश्न 1. भारत के बुनियादी प्राकृतिक-भौगोलिक क्षेत्र कौन-से हैं? ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से इनकी विशेषताओं का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-22, 'आधारभूत भू-आकृतिक विभाजन, क्षेत्रीय प्राकृतिक विशेषताएँ'

प्रश्न 2. हड़प्पा सभ्यता के पतन के क्या कारण हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-52, प्रश्न 3

प्रश्न 3. भारत की तामपाषाणकालीन कृषि संस्कृतियों की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-77, प्रश्न 1

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(i) **मध्यपाषाणीय संस्कृति**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-33, 'मध्यपाषाण युग'

(ii) **प्रारंभिक हड़प्पा संस्कृति**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-50, प्रश्न 4

(iii) **चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) संस्कृति**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-69, 'चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति'

(iv) **महापाषाणीय संस्कृति**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-72, 'महापाषाणयुगीन संस्कृतियां, महापाषाणयुगीन संस्कृतियों की उत्पत्ति'

भाग–II

प्रश्न 5. भारत पर सिकन्दर (Alexander) के आक्रमण का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-115, प्रश्न 1

प्रश्न 6. 'साम्राज्य' की अवधारणा क्या है? क्या मौर्यों ने एक साम्राज्य का निर्माण किया?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-119, 'साम्राज्य की धारणा', पृष्ठ-123, प्रश्न 7

प्रश्न 7. दक्कन और तमिलहम् में प्रारंभिक राज्य निर्माण पर एक लेख लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-136, 'राज्य की उत्पत्ति के विषय में', पृष्ठ-138, 'दक्षिण भारत (तमिलहम्) क्षेत्र विशेष' तथा पृष्ठ-140, प्रश्न 4

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(i) **गौतम बुद्ध**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-104, 'गौतम बुद्ध और बौद्ध धर्म की उत्पत्ति'

(ii) **आजीवक (Ajivika) पंथ**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-108, 'आजीवक' पृष्ठ-111, प्रश्न 5

(iii) **अशोक का धम्म**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-120, 'अशोक मौर्य'

(iv) **प्रायद्वीपीय भारत में व्यापार**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-145, 'व्यापार के प्रकार'

■■

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

भारत का इतिहास : प्राचीनतम काल से लगभग 300 सी.ई. तक

(History of India from the Earliest Times upto C. 300 C.E.)

B.H.I.C.-131

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खंड से कम-से-कम* ***दो*** *प्रश्न कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड-I

प्रश्न 1. भारत के आधारभूत भू-आकृतिक क्षेत्र कौन-से हैं? भारतीय इतिहास पर भूगोल का किस प्रकार प्रभाव पड़ा है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-29, प्रश्न 2 तथा प्रश्न 3

प्रश्न 2. हड़प्पा सभ्यता के क्षेत्रीय विस्तार की चर्चा कीजिए। हड़प्पा सभ्यता की भौतिक विशेषताओं पर चर्चा हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के संदर्भ में कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-50, प्रश्न 4, अध्याय-6, पृष्ठ-61, प्रश्न 4

प्रश्न 3. आरंभिक वैदिक अर्थव्यवस्था और समाज की प्रमुख विशेषताएं क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-87, 'अर्थव्यवस्था', पृष्ठ-88, 'राजनीति और समाज', पृष्ठ-89, 'धर्म'

इसे भी देखें–ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा उत्तर वैदिक काल में आर्यों के आर्थिक जीवन में पर्याप्त प्रगति हो गई थी। उत्तर वैदिक कालीन लोगों के आर्थिक जीवन को निम्नांकित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है–

कृषि–उत्तर वैदिक काल में आर्यों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। 'शतपथ ब्राह्मण' में कृषि से संबंधित चारों क्रियाओं जुताई, बुआई, कटाई तथा मड़ाई का उल्लेख किया गया है।

इस ग्रंथ में 'विदेह माधव' की कथा का भी उल्लेख मिलता है, जिससे यह संकेत मिलता है कि आर्य संपूर्ण गंगा घाटी में कृषि करने लगे थे। भूमि जोतने के लिए हल का प्रयोग किया जाता था। भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने और अच्छी फसल उगाने के लिए खाद का भी प्रयोग किया जाता था। जौ, चावल, गेहूं, उड़द, मूंग, तिल, मसूर आदि खाद्यान्न उगाए जाते थे और वर्ष में दो फसलें उत्पन्न की जाती थीं।

पशुपालन–उत्तर वैदिक काल में आर्यों का दूसरा प्रमुख व्यवसाय पशुपालन था।

उत्तर वैदिक काल में कृषि एवं पशुपालन–हल चलाने के लिए 6 व 8 जोड़े बैल जोते जाते थे। दलदली भूमि पर हल चलाने के लिए यह पशु बहुत ही उपयोगी था। इस काल में गाय, बैल, भेड़, बकरी, घोड़ा, कुत्ता, गधा आदि के अतिरिक्त हाथी भी पाला जाने लगा था। इस काल में अधिक-से-अधिक गायों को पालना वैभव का प्रतीक समझा जाता था।

उद्योग एवं व्यवसाय–उत्तर वैदिक काल में कृषि और पशुपालन के अतिरिक्त अनेक प्रकार के उद्योगों और व्यवसायों के बारे में जानकारी तत्कालीन साहित्य से प्राप्त होती है, शिकारी, मछुए, सारथी, कुम्हार, सुनार, लुहार, रस्सी बनाने वाले, टोकरी बुनने वाले, धोबी, नाई, जुलाहा, रंगरेज, नर्तक, ज्योतिषी, चिकित्सक, गायक आदि अनेक उद्योग एवं व्यवसाय प्रचलित थे। वस्त्र निर्माण उद्योग एक प्रमुख उद्योग था।

व्यापार एवं वाणिज्य–उत्तर वैदिक काल में स्वदेशी एवं विदेशी दोनों ही प्रकार के व्यापार प्रचलित थे।

वैदिक ग्रंथों में समुद्र यात्रा की भी चर्चा है, जिससे वाणिज्य एवं व्यापार का संकेत मिलता है। साधारणतः व्यापार विनिमय प्रणाली के द्वारा ही होता था।

इस काल की मुख्य मुद्रा को 'शतमान' कहा जाता था। मुद्राओं का नियमित प्रचलन नहीं हुआ था। यद्यपि निष्क, शतमान, पाद, रत्तिका तथा गुंजा का उल्लेख मिलता है, किंतु इनका प्रयोग मुद्रा के रूप में नहीं, बल्कि माप की इकाई के रूप में होता था। व्यापार पण द्वारा संपन्न होता था।

धातुओं का ज्ञान–इस काल में आर्यों का धातु ज्ञान पहले से अधिक हो गया था। वर्ण एवं लोहे के अतिरिक्त इस युग के आर्य टिन, तांबा, चांदी और सीसा से भी परिचित हो चुके थे।

धातु शिल्प उद्योग बन चुका था। इस युग में धातु गलाने का उद्योग बड़े पैमाने पर होताथा। संभवतः तांबे को गलाकर विभिन्न प्रकार के उपकरण एवं वस्तुएं बनाई जाती थी।

उत्तर प्रदेश के एटा जिले के अतरंजीखेड़ा में पहली बार कृषि से संबंधित लौह उपकरण प्राप्त हुए हैं।

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारत का इतिहास: प्राचीनतम काल से लगभग 300 सी.ई. तक
(History of India from the Earliest Times upto C. 300 C.E.)

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत
(Sources of Ancient Indian History)

1

परिचय

प्राचीन भारत के इतिहास की जानकारी के साधनों को दो भागों में बांटा जा सकता है–साहित्यिक साधन और पुरातात्त्विक साधन, जो देशी और विदेशी दोनों हैं। साहित्यिक साधन दो प्रकार के हैं-धार्मिक साहित्य और लौकिक साहित्य। धार्मिक साहित्य भी दो प्रकार के हैं–ब्राह्मण ग्रन्थ और अब्राह्मण ग्रन्थ। ब्राह्मण ग्रन्थ दो प्रकार के हैं–श्रुति जिसमें वेद, ब्राह्मण, उपनिषद इत्यादि आते हैं और स्मृति जिसके अन्तर्गत रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृतियां आदि आती हैं। लौकिक साहित्य भी चार प्रकार के हैं–ऐतिहासिक साहित्य, विदेशी विवरण, जीवनी और कल्पना प्रधान तथा गल्प साहित्य। पुरातात्विक सामग्रियों को तीन भागों में बांटा जा सकता है–अभिलेख, मुद्राएं तथा भग्नावशेष स्मारक।

अध्याय का विहंगावलोकन

साहित्यिक स्रोत

किसी भी प्रकार का स्रोत चाहे साहित्यिक हो या पुरातात्विक, इतिहास लेखन का एक महत्त्वपूर्ण भाग है। साहित्यिक स्रोतों के अंतर्गत वैदिक, बौद्ध और जैन साहित्य, महाकाव्य, पुराण, संगम साहित्य आदि सम्मिलित किए जा सकते हैं, लेकिन इतिहास के पुनरावलोकन के लिए प्राचीन भारतीय इतिहास की विश्वसनीयता पर बहस होती रहती है। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों के संदर्भ में इतिहासकारों को विभिन्न कालानुक्रमिक घटनाओं का विश्लेषण करना पड़ता है। अधिकतर प्राचीन भारतीय इतिहास की प्रवृत्ति धार्मिक है। पश्चिमी विद्वानों को भी भारतीय ग्रंथों के कालक्रम के बारे में कुछ अधिक जानकारी नहीं प्राप्त हुई, बल्कि उन्हें अनेक दंतकथाएं, अनुष्ठान व प्रार्थना आदि के बारे में पता चला। हालांकि अब यह स्पष्ट है कि प्राचीन भारत में लिखित के बजाए एक मजबूत मौखिक परंपरा थी, जिसका विश्लेषण करना मुश्किल है। चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार प्रत्येक भारतीय राज्य में अधिकारिक रिकार्ड के रख-रखाव के लिए अलग अधिकारी और अलग विभाग थे जो राज्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण पहलुओं का लेखा-जोखा रखते थे तथा ऐसा आगे भी चलता रहा। चूंकि प्राचीन भारतीय साहित्य धर्म, जादू, ब्रह्मांड विज्ञान, अनुष्ठान, प्रार्थना आदि से भरा है अतः इनका काल निर्धारण एक समस्या है।

फिर भी वेद, उपनिषद, पुराण आदि भारतीय इतिहास को समझने में विशेष फलदायी है।

वैदिक साहित्य

वेद का अर्थ है ज्ञान। माना जाता है कि भगवान ब्रह्मा द्वारा कहे गए शब्दों को संस्मरण के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाया गया। वैदिक साहित्य की भाषा वैदिक संस्कृत कहलाती है, जिसके उच्चारण की प्रक्रिया विशिष्ट है। वैदिक साहित्य को तीन प्रकार से वर्गीकृत किया गया है।

(क) संहिता या संग्रह–इनमें चार वैदिक संहिताएं अथवा चार वेद सम्मिलित हैं–ऋग्वेद, अथर्ववेद, सामवेद और यजुर्वेद। वेदों की उचित समझ के लिए छः वेदांगों का भी विकास किया गया है। ये हैं–शिक्षा (स्तर विज्ञान), कल्प (अनुष्ठान), व्याकरण, निरुक्त (व्युत्पत्ति), छद (मैट्रिक्स), ज्योतिष (खगोल विज्ञान) प्रत्येक वेदांग ने उपदेश के रूप में साहित्य का विकास किया है।

(ख) ब्राह्मण–वेदों के अतिरिक्त ब्राह्मण जैसे ग्रंथ भी वैदिक साहित्य में सम्मिलित हैं। ये धार्मिक विषयों पर गद्य आधारित ग्रंथ है, जो बलिदान एवं समारोह के व्यवहारिक और रहस्यमय महत्त्व पर बल देते हैं।

(ग) आरण्यक और उपनिषद–आरण्यक भी उत्तर वैदिक साहित्य में सम्मिलित है जिसमें वेदों के अनुष्ठानों से संबंधित व्युत्पत्ति, व्याख्या आदि का वर्णन है। उपनिषद शब्द उप (पास) तथा निषद (बैठ जाना) से बना है, जिसका अर्थ है शिष्य का गुरु के पास/निकट बैठकर आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति करना। हिन्दू

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

धर्म से संबंधित कुछ प्रमुख धार्मिक शब्द जैसे ब्रह्म (उच्चतम सत्ता) और आत्मन (आत्मा या स्वयं) का उल्लेख उपनिषदों में मिलता है। आरण्यकों को कर्मकांड के रूप में मान्यता दी गई है, जबकि उपनिषदों को ज्ञान-कांड या आंतरिक दार्शनिक सिद्धांत के रूप में मान्यता प्राप्त है। वसुधैव कुटुबकम अर्थात दुनिया एक परिवार है, अतिथिदेवोभव अर्थात अतिथि देवता है, सत्यमेव जयते (सत्य की सदैव जीत होती है) जैसे भारतीय मूल्य भी उपनिषदों से ही लिए गए हैं।

संपूर्ण वैदिक साहित्य ईश्वर से उत्पन्न अत: पवित्र माना जाता है। ऋग्वेद सबसे प्राचीन वेद ग्रंथ है जिसे ऋषियों के विशेष परिवार द्वारा परंपरा के अनुसार रचित किया गया है। अत: इन्हें पारिवारिक पुस्तकें भी कहते हैं। अधिकतर वैदिक साहित्य में गीत, प्रार्थना, धार्मिक अनुष्ठान सम्मिलित हैं, किंतु इतिहासकारों ने वैदिक साहित्य द्वारा राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक सामग्री भी प्राप्त की है।

सूत्र भी वैदिक ग्रंथों की एक अन्य श्रेणी है, जिन्हें स्मृति के रूप में वर्गीकृत किया गया है। सूत्र ग्रंथ कर्मकांड पर आधारित है, जिसमें श्रोत सूत्र, गृहयसूत्र व धर्मसूत्र सम्मिलित हैं। धर्मसूत्र को संवैधानिक रूप से प्राचीन भारतीय राजनीति और समाज के लिए कानून आधारित पुस्तकें कहा जाता है। ये धर्मशास्त्र भी कहलाता है और इनका संकलन 600-200 बी.सी.ई. के मध्य हुआ है। स्मृति ग्रंथों में मनु स्मृति, नारद स्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति सम्मिलित हैं। इनकी रचना 200-900 बी.सी.ई. के मध्य हुई थी। इनमें विभिन्न वर्णों, राजा व अधिकारियों के कर्त्तव्य का वर्णन है। इनमें शादी तथा संपत्ति से संबंधित नियमों के अतिरिक्त चोरी, हमले, हत्या, व्याभिचार आदि के लिए विभिन्न प्रकार के दंड भी निर्धारित किए गए हैं।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र

कौटिल्य का अर्थशास्त्र 15 पुस्तकों में रचित राज्य तथा अर्थव्यवस्था के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण कृति है। पुस्तक II और III को प्रारम्भिक माना गया है। यह शास्त्र भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था के अध्ययन के लिए प्रचुर मात्रा में सामग्री उपलब्ध कराता है। इसके कुछ भाग मौर्यकाल की स्थिति और समाज को दर्शाते हैं।

महाकाव्य

रामायण और महाभारत भारत के दो महाकाव्य हैं महाभारत महाकाव्य वेदव्यास द्वारा रचित संभवत: 10 वीं सदी बी.सी.ई. को इंगित करता है। कौरव और पांडव संघर्ष पर आधारित महाभारत उत्तर वैदिककाल से संबंधित हो सकता है। यह माना जाता है कि इसमें समय के साथ भाग जोड़े गए हैं अत: विभिन्न कालानुक्रमों का ध्यान रखना इनके अध्ययन में अपेक्षित है। वाल्मीकि द्वारा रामायण की रचना की गई है। इन दोनों काव्यों में वर्णित कुछ स्थलों की खुदाई में तत्कालीन बस्तियों का अनुमान प्राप्त होता है। दोनों महाकाव्य हिंदु धर्म की सामाजिक प्रथाएं व दर्शन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

पुराण

महाकाव्यों के पश्चात् पुराण आते हैं, जिनकी संख्या अठारह है। इनकी रचना का श्रेय 'सूत' लोमहर्षण अथवा उनके पुत्र उग्रश्रवस या उग्रश्रवा को दिया जाता है। पुराणों में पांच प्रकार के विषयों का वर्णन सिद्धान्तत: इस प्रकार है-सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वंतर तथा वंशानुचरित। सर्ग बीज पुराण है, प्रतिसर्ग प्रलय के बाद की पुनर्सृष्टि को कहते हैं, वंश में देवताओं या ऋषियों के वंश वृक्षों का वर्णन है, मन्वन्तर में कल्प के महायुगों का वर्णन है, जिनमें से प्रत्येक में मनुष्य का पिता एक मनु होता है और वंशानुचरित पुराणों के वे अंग हैं, जिनमें राजवंशों की तालिकायें दी हुई हैं और राजनीतिक अवस्थाओं, कथाओं और घटनाओं के वर्णन हैं। उपर्युक्त पांच पुराण के विषय होते हुए भी अठारहों पुराणों में वंशानुचरित का प्रकरण प्राप्त नहीं होता। यह दुर्भाग्य ही है, क्योंकि पुराणों में जो ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अधिक महत्त्वपूर्ण विषय है, वह वंशानुचरित है। वंशानुचरित केवल भविष्य, मत्स्य, वायु, विष्णु, ब्रह्माण्ड तथा भागवत पुराणों में ही प्राप्त होता है। गरुड़ पुराण में भी पौरव, इक्ष्वाकु और बार्हदय राजवंशों की तालिका प्राप्त होती है, पर इनकी तिथि पूर्णतया अनिश्चित है। पुराणों की भविष्यवाणी शैली में कलियुग के नृपतियों की तालिकाओं के साथ शिशुनाग, नन्द, मौर्य, शुंग, कण्व, आन्ध्र तथा गुप्तवंशों की वंशावलियां भी प्राप्त होती हैं। शिशुनागों में ही बिम्बिसार एवं अजातशत्रु का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार पुराण चौथी शताब्दी की स्थितियों का उल्लेख करते हैं। मौर्य वंश के संबंध में विष्णु पुराण में अधिक उल्लेख मिलते हैं। ठीक इसी प्रकार मत्स्य पुराण में मान्ध्र वंश का पूरा उल्लेख मिलता है। वायु पुराण गुप्त सम्राटों की शासन प्रणाली पर प्रकाश डालते हैं। इन पुराणों में शूद्रों और म्लेच्छों की वंशावली भी दी गयी है। आभीर, शक, गर्दभ, यवन, तुषार, हूण आदि के उल्लेख इन्हीं सूचियों में मिलते हैं।

संगम साहित्य

संगम साहित्य में तमिल ग्रंथ आते हैं, जिनका संकलन 400 बी.सी.ई.-200 सी.ई. के मध्य हुआ। चूंकि यह संकलन छोटी व लंबी कविताओं के रूप में कवियों प्रमुखों और राजाओं द्वारा गोष्ठियों में किया गया, जिन्हें संगम कहते थे। अत: यह साहित्य संगम साहित्य कहलाया। पहला और अंतिम संगम सम्मेलन मदुरै तथा दूसरा सम्मेलन कपाटपुरम में हुआ पर यह निश्चित नहीं है। इसलिए विद्वान इसे 'संगम साहित्य' के स्थान पर प्रारंभिक शास्त्रीय तमिल साहित्य भी कहना पसन्द करते हैं। ये कविताएं प्रेम और युद्ध से प्रेरित हैं। इसमें प्रत्येक वर्ण के कवि का योगदान होने के कारण वे उस समय के सामाजिक जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं। संगम साहित्य धार्मिक नहीं था। कई कविताएं राजा के सैन्य उपलब्धियों का वर्णन करती हैं। संगम साहित्य में व्यापार तथा कावेरीपट्टिनम जैसे समृद्ध क्षेत्र का भी वर्णन है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

जीवन-वृतांत, कविता और नाटक

प्रारंभिक भारतीय साहित्य नाटक और कविता की कृतियों से परिपूर्ण है। अश्वघोष, भाष, कालिदास जैसे संस्कृत के कवियों व नाटककारों ने भारतीय साहित्य को अतुलनीय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अश्वघोष ने बुद्धचरित, सौन्दरानंद की रचना की जबकि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुंतलम, रघुवंशम, कुमार सम्भवम जैसी काव्य कृतियों को लिखा। नाटककार भाष ने पंचरात्र, स्वप्न-वासवदत्ता, दत्तवाक्य आदि की रचना की। विशाखादत्त के मुद्राराक्षस नाटक में तत्कालीन मौर्य समाज और संस्कृति की झलक मिलती है। कवि शूद्रक ने भी ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित नाटक लिखे। लोकिप्रय लोक कथाओं के संग्रह में पचतंत्र और कथासरित्सागर सम्मिलित है। बाणभट्ट द्वारा रचित हर्षचरित पुष्यभूति राजवंश के राजा हर्षवर्धन की जीवनी पर आधारित है। इसी प्रकार बिल्हण का विक्रमाकदेव चरित चालुक्य राजा विक्रमादित्य VI की विजयगाथा को दर्शाता है। जयसिंह की कुमारपाल चरित, नैचंद्र का हम्मीरकाव्य, बल्लाल का भोज प्रबंध, चंदबरदाई का पृथ्वीराज चरित आदि राजाओं के जीवन पर आधारित रचनाएं हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिणी एक उत्कृष्ट कृति है जो इतिहास-लेखन संबंधी शोध की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। कल्हण की यह कृति समझाती है कि इतिहास को किस प्रकार लिखा जाना चाहिए। कश्मीर के इतिहास की जानकारी के स्रोत के रूप में कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिणी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

बौद्ध और जैन साहित्य

बौद्धमतावल्बियों ने जिस साहित्य का सृजन किया, उसमें भारतीय इतिहास की जानकारी के लिए प्रचुर सामग्रियां निहित हैं। 'त्रिपिटक' इनका महान ग्रन्थ है। सुत्त, विनय तथा अभिधम्म मिलाकर 'त्रिपिटक' कहलाते हैं। बौद्ध संघ, भिक्षुओं तथा भिक्षुणियों के लिये आचरणीय नियम विधान विनय पिटक में प्राप्त होते हैं। सुत्त पिटक में बुद्धदेव के धर्मोपदेश हैं। सुत्तपिटक पांच निकायों में विभक्त है-

प्रथम दीर्घ निकाय में बुद्ध के जीवन से संबद्ध एवं उनके सम्पर्क में आये व्यक्तियों के विशेष विवरण हैं। दूसरे संयुक्त निकाय में छठी शताब्दी पूर्व के राजनीतिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है, किंतु सामाजिक और आर्थिक स्थिति की जानकारी इससे अधिक होती है। तीसरा निकाय को भगवान बुद्ध को दैविक शक्तियों से युक्त एक विलक्षण व्यक्ति मानता है।

चौथे, अंगुत्तर निकाय में सोलह महाजनपदों की सूची मिलती है। पांचवें, खुद्दक निकाय लघु ग्रंथों का संग्रह है, जो छठी शताब्दी ई.पूर्व से लेकर मौर्यकाल तक का इतिहास प्रस्तुत करता है। अमिधम्म पिटक में बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धान्त हैं। कुछ अन्य बौद्ध ग्रंथ भी हैं। 'मिलिन्दपन्हो' में यूनानी शासक मिनेण्डर और बौद्ध भिक्षु नागसेन के वार्तालाप का उल्लेख है।

'दीपवंश' मौर्यकाल के इतिहास की जानकारी देता है। 'महावंश' भी मौर्यकालीन इतिहास को बतलाता है। 'महाबोधिवंश' मौर्य काल का ही इतिहास माना जाता है। 'महावस्तु' में भगवान बुद्ध के जीवन को बिन्दु बनाकर छठी शताब्दी ई. पूर्व के इतिहास को प्रस्तुत किया गया है। 'ललितविस्तार' में बुद्ध की ऐहिक लीलाओं का वर्णन है जो महायान से संबद्ध है। पाली की 'निदान कथा' बोधिसत्वों का वर्णन करती है। यातिमोक्ख, महावग्ग, चुग्लवग्ग, सुत विभंग एवं परिवार में भिक्षु-भिक्षुनियों के नियमों का उल्लेख है। ये पांचों ग्रन्थ 'विनय' के अन्तर्गत आते हैं।

अभिधम्म के सात संग्रह हैं, जिनमें तत्वज्ञान की चर्चा की गयी है। ऐतिहासिक ज्ञान के लिए त्रिपिटकों का अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि इसमें बौद्ध संघों के संगठनों का उल्लेख किया गया है। इसी प्रकार बौद्धग्रन्थों में जातक कथाओं का दूसरा महत्वपूर्ण स्थान है, जिनकी संख्या 549 है। ''इनका महत्व केवल इसीलिए नहीं है कि इनका साहित्य और कला श्रेष्ठ है, प्रत्युत तीसरी शताब्दी ई. पूर्व की सभ्यता के इतिहास की दृष्टि से भी इनका वैसा ऊंचा मान है।'' जातक कथाओं में भगवान बुद्ध के जन्म के पूर्व की कथाएं उल्लिखित हैं।

जैन साहित्य के ग्रंथों में दिगंबरों का साहित्य शौरसेनी में है जबकि श्वेतांबर साहित्य अर्धमागधी की दो उपभाषाओं में है। महावीर द्वारा शिष्यों को दिए उपदेश पहली बार 14 वीं शताब्दी बी. सी.ई. में संकलित किए गए। स्थूलभद्र ने पाटलिपुत्र में जैन परिषद का गठन करके 12 अंगों में जैन साहित्य का पुनर्निर्माण किया। श्वेतांबरों द्वारा स्वीकार किए गए शास्त्रों में 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्णद, 6 छेदसूत्र, 2 सूत्र और 4 मूलसूत्र सम्मिलित हैं। ये शास्त्र जैन सिद्धांतों एवं तत्वमीमांसा की व्याख्या करते हैं। जैन धर्म के साहित्य द्वारा जैन धर्म के इतिहास का ज्ञान होता है।

पुरातात्विक स्रोत

पुरातत्व के अंतर्गत अतीत को समझने के लिए हम मूर्तियों, मृदभांड, हड्डियों के टुकड़े, घर के अवशेषों, सिक्कों (मुद्राएं) शिलालेख या अभिलेख आदि पुरातात्विक स्रोत की सहायता से भौतिक संस्कृति का अध्ययन करते हैं। ये पुरातात्विक स्रोतों के अध्ययन के आधार पर ऐतिहासिककाल का पुनर्निर्माण किया जाता है। 1920 के दशक तक यह माना जाता था कि भारतीय सभ्यता की शुरूआत लगभग छठवीं शताब्दी बी.सी.ई से शुरू हो गयी थी। लेकिन मोहनजोदड़ों और हड़प्पा की खुदाई के साथ भारतीय सभ्यता के 5000 बी.सी.ई. में अस्तित्व में आने का पता चला। अब पुरातत्व की सहायता से यह ज्ञात हुआ है कि पाषाण काल की अवधि से ही कम या अधिक बस्तियों की बसावट प्रारंभ हो गयी थी। प्रमुख पुरातात्विक तरीकों में उत्खनन और अन्वेषण, जैसे तरीके महत्वपूर्ण हैं। इनके द्वारा हमें सभ्यता की उत्पत्ति, प्रसार, निवास व जीवन निर्वाह का प्रकार, शहरीकरण, व्यापार, कृषि,

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अर्थव्यवस्था आदि का ज्ञान होता है। किसी सभ्यता के बारे में जानने के लिए मुद्राशास्त्र (सिक्कों का अध्ययन) भी किया जाता है। पुरातात्विक स्रोतों को मुख्यतया मुद्राओं (सिक्कों) शिलालेख (अभिलेख) तथा स्मारक आदि में बांटा जा सकता है।

सिक्के

उत्खनन में सिक्के मुद्रा भंडार के रूप में पाए जाते हैं। सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहा जाता है।

206 ईसा पूर्व से लेकर 300 ईस्वी तक के भारतीय इतिहास का ज्ञान हमें मुख्य रूप से मुद्राओं की सहायता से ही प्राप्त हो पाता है। इसके पूर्व के सिक्कों पर लेख नहीं मिलता और उन पर जो चिह्न बने हैं उसका ठीक-ठीक ज्ञान नहीं है। ये सिक्के आहत सिक्के या पंच मार्क सिक्के कहलाते हैं। धातु के टुकड़ों पर ठप्पा मारकर बनाई गई बुद्धकालीन आहत मुद्राओं पर पेड़, मछली, सांड, हाथी, अर्धचंद्र आदि वस्तुओं की आकृतियां होती थीं। बाद के सिक्कों पर राजाओं और देवताओं के नाम तथा तिथियां भी उल्लेखित हैं। इस प्रकार की मुद्राओं के आधार पर अनेक राजवंशों के इतिहास का पुनर्निर्माण संभव हो सका है, विशेषकर उन हिंद-यूनानी शासकों के इतिहास का, जो उत्तरी अफगानिस्तान से भारत पहुंचे थे और ईसा पूर्व द्वितीय से प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व तक यहां शासन किये। मुद्राओं का उपयोग दान-दक्षिणा, क्रय-विक्रय तथा वेतन-मजदूरी के भुगतान में होता था। शासकों की अनुमति से व्यापारिक संघ (श्रेणियों) ने भी अपने सिक्के चलाए थे। सर्वाधिक मात्रा में मुद्राएं मौर्योत्तरकाल में मिली हैं जो सीसा, पोटीन, तांबा, कांसे, चांदी तथा सोने की हैं। कुषाण शासकों द्वारा जारी स्वर्ण सिक्कों में जहां सर्वाधिक शुद्धता थी, वहीं गुप्त शासकों ने सबसे अधिक मात्रा में स्वर्ण सिक्के जारी किए। मुद्राओं से तत्कालीन आर्थिक दशा तथा संबंधित राजाओं की साम्राज्य सीमा का भी ज्ञान हो जाता है। कनिष्क के सिक्कों से उसका बौद्ध धर्म का अनुयायी होना प्रमाणित होता है। समुद्रगुप्त के कुछ सिक्कों पर यूप (यज्ञ स्तंभ) बना है जबकि कुछ अन्य सिक्कों पर अश्वमेध पराक्रमः शब्द उत्कीर्ण है, साथ ही उसे वीणा बजाते हुए भी दिखाया गया है। इंडो-यूनानी तथा इंडो-सीथियन शासकों के इतिहास के मुख्य स्रोत सिक्के ही हैं। सातवाहन राजा शातकर्णी की एक मुद्रा पर जलपोत अंकित होने से उसके द्वारा समुद्र विजय का अनुमान लगाया गया है। चंद्रगुप्त द्वितीय की व्याघ्र शैली की चांदी की मुद्राओं में उसके द्वारा पश्चिम भारत के शकों पर विजय सूचित होती है।

शिलालेख

ये शिलालेख पाषाण शिलाओं, स्तंभों, ताम्रपत्रों, दीवारों, मुद्राओं एवं प्रतिमाओं पर उत्खनित हैं। सबसे प्राचीन शिलालेख जिन्हें पढ़ा जा सका है, अशोक के हैं। अशोक के शिलालेखों की भाषा प्राकृत है। कर्नाटक राज्य के रायचूर के पास स्थित मस्की तथा गुज्जर्रा (दतिया) मध्य प्रदेश से प्राप्त शिलालेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है। उसे प्रायः देवानाम पिय पियदस्सी (देवताओं का प्रिय, प्रियदर्शी) राजा कहा गया है। अशोक के अधिकांश शिलालेख ब्राह्मी लिपि में हैं, जो बाएं से दाएं लिखी जाती थी। पश्चिमोत्तर प्रांत से प्राप्त उसके शिलालेख खरोष्ठी लिपि में हैं जो दाएं से बाएं लिखी जाती थी। पाकिस्तान और अफगानिस्तान से प्राप्त अशोक के शिलालेखों में यूनानी और अमराइक लिपियों का प्रयोग हुआ है। अशोक के शिलालेखों को पढ़ने में सर्वप्रथम सफलता (1837 ईसवी में) जेम्स प्रिंसेप को मिली। सबसे अधिक प्राचीन शिलालेख 2500 ईसापूर्व की हड़प्पाकाल के हैं जो मोहरों पर भावचित्रात्मक लिपि में अंकित हैं जिनका प्रामाणिक पाठ अभी तक नहीं हो पाया है; चाहे कितने भी दावे क्यों न किए जाते हों।

शिलालेखों के अनेक प्रकार हैं। कुछ शिलालेखों में अधिकारियों और जनता के लिए जारी किए गए सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक राज्यादेश एवं निर्णयों की सूचना रहती है; जैसे-अशोक के शिलालेख। दूसरे प्रकार के वे आनुष्ठानिक शिलालेख हैं जिन्हें बौद्ध, जैन, वैष्णव आदि संप्रदायों के मतानुयायियों ने स्तंभों, प्रस्तर फलकों, मंदिरों एवं प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण कराया। तृतीय श्रेणी के वे शिलालेख हैं जिनमें राजाओं की विजय प्रशस्तियों का वर्णन है। लेकिन उनके दोषों का उल्लेख नहीं है। प्रशस्ति शिलालेखों में प्रसिद्ध हैं-खारवेल का हाथीगुंफा शिलालेख। शक क्षत्रप रुद्रदामन का गिरनार जूनागढ़ शिलालेख, सातवाहन नरेश पुलुमावी का नासिक गुफालेख, समुद्रगुप्त का हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग स्तंभ लेख, मालवराज यशोधर्मन का मंदसौर शिलालेख, चालुक्य पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल शिलालेख (रविकीर्ति), प्रतिहार नरेश भोजराज का ग्वालियर शिलालेख, स्कंद गुप्त का भीतरी तथा जूनागढ़ शिलालेख, बंगाल के शासक विजय सेन का देवपाड़ा शिलालेख इत्यादि। गैर राजकीय शिलालेखों में यवनदूत हेलियोडोरस का बेसनगर विदिशा से प्राप्त गरुड़ स्तंभलेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिनसे द्वितीय शताब्दी ईसापूर्व के मध्य भारत में भागवत धर्म के विकसित होने का प्रमाण मिलता है। एरण मध्य प्रदेश से प्राप्त वराह प्रतिमा पर हूणराज तोरमाण का लेख अंकित है। दक्षिण भारत के पल्लव, चालुक्य, राष्ट्रकूट, पांड्य और चोल वंश का इतिहास लिखने में इन शासकों के शिलालेख बहुत ही उपयोगी साबित होते हैं।

स्मारक

शिलालेखों तथा मुद्राशास्त्र के अतिरिक्त पुरातन अवशेष स्मारक के रूप में अतीत को समझने के लिए उपयोगी है।

मूर्तिकला-कुषाणकाल, गुप्तकाल और गुप्तोत्तरकाल में जो मूर्तियां निर्मित की गईं उनसे जनसाधारण की धार्मिक आस्थाओं और मूर्तिकला का ज्ञान मिलता हैं। कुषाणकालीन मूर्तियों में जहां विदेशी प्रभाव अधिक है, वही गुप्तकालीन मूर्तिकला में स्वाभाविकता परिलक्षित होती है जबकि गुप्तोत्तर कला में सांकेतिकता अधिक है। भरहुत, बोधगया, सांची और अमरावती की मूर्तिकला में जन सामान्य के जीवन की यथार्थ झांकी मिलती है।

मध्ययुगीन स्मारकों से शासक वर्ग के वैभव का पता चलता है।

www.neerajbooks.com